समक्ष रखा। इस माध्यम से उन्होंने समूचे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का महत्वपूर्ण कार्य किया तथा भारतीय जनता को अपने-अपने संकुचित दायरों से बाहर निकलकर पूरे देश को स्वतन्त्रता की बात सोचने के लिए प्रेरित किया। प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता के बाद उनका यह प्रयास ठीक ऐसा ही था जैसे कोई बहुत बड़ी छंलाग लगाने के लिए कुछ दूरी के लिए पिछे हटता है। महर्षि जी का प्रयास सफल हुआ तथा लोगों के भीतर एक नई उमंग, जोश और साहस तथा सामूहिक देशभक्ति के भावों का सृजन हुआ। इतिहास इस बात का गवाह है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्रीय जागरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कांग्रेस का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि स्वंतन्त्रता संग्राम में अस्सी प्रतिशत से भी अधिक आर्यसमाजियों ने अपना योगदान दिया है। यहीं नहीं एक आकलन के अनुसार स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर कुल उन्नतीस सौ लोगों ने फांसी को चूमा है जिनमें से अठाईस सौ आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हैं। केवल इतना ही नहीं बल्कि स्वतन्त्रता की इस लड़ाई में भाग लेने वाले अन्य लगभग समस्त नेताओं पर भी किसी न किसी प्रकार महर्षि दयानन्द या आर्यसमाज की ही प्रेरणा रही है। महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में सबसे पहले स्वदेश और स्वतन्त्रता की बात कही है। बाल गंगाधर तिलक जी का कथन है कि 'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' यह प्रेरणा मुझे महर्षि दयानन्द जी से ही मिली है। लाला लाजपतराय, सरदार भगत सिंह, अजीत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल एवं उनके शिष्य इशफाकउल्ला खां, रोशन सिंह, भाई परमानन्द आदि अनेक क्रान्तिकारियों का प्रेरणास्त्रोत आर्यसमाज ही रहा है। केवल इतना ही नहीं बल्कि विदेश में इण्डिया हाऊस की स्थापना करने वाले तथा